एवरशाइन

संस्कृत व्याकरण

कक्षा-6

लेखक

डॉ॰ शशिकान्त पाण्डेय

अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग
आर॰सी॰एस॰ कॉलेज, भंभौल, बेगूसराय
(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा)

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

WZ-348, नाँगल राया, नई दिल्ली-110046

© प्रकाशकाधीन सुरक्षित हैं

इस पुस्तक के किसी भाग का, किसी भी रूप में, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना मुद्रण, संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है ।

प्रकाशक

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

सोनी हाउस, WZ-348, नाँगल राया, नई दिल्ली-110046

फोन: 28111758, 28113958 फैक्स: 28112353

ई-मेल: evershinepub@gmail.com

मुद्रक : ताज प्रेस

ए / 35-4, मायापुरी फेस I, नई दिल्ली-110064

शुभाशंसा

संस्कृत-व्याकरण की यह पुस्तक माध्यमिक कक्षा के लिए लिखी गई है । मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि लेखक ने बड़े मनोयोग से संस्कृत-व्याकरण के आरम्भिक विद्यार्थियों के लिए एक ऐसी पुस्तक प्रस्तुत की है, जिसमें सरल एवं सुबोध भाषा का प्रयोग किया गया है । मैं आशा करता हूँ कि प्रस्तुत ग्रन्थ न केवल माध्यमिक कक्षा के छात्रों के लिए, अपितु संस्कृत-व्याकरण के सामान्य जिज्ञासुओं के लिए भी समान रूप से उपादेय होगा । ग्रन्थ का अवलोकन करने पर यह प्रतीत होता है कि इसमें विद्यार्थियों के स्तर का ध्यान रखते हुए सरलता की ओर लेखक ने विशेष ध्यान दिया है । लेखक का यह प्रयास श्लाघनीय है । पारिभाषिक पदावली का आंग्ल-रूपान्तरण ग्रन्थ की उपादेयता को बढ़ाता है । निस्सन्देह यह पुस्तक संस्कृत के अध्ययन के प्रति छात्रों की रुचि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी ।

इस प्रस्तुति के लिए मैं अपने शिष्य आयुष्मान् डा० शशिकान्त को वर्धापन देते हुए यह कामना करता हूँ कि वे 'विद्याभ्यसनं व्यसनम्' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए वाग्देवी की उपासना में निरन्तर संलग्न रहें ।

प्रो० अवनीन्द्र कुमार
आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।

प्राक्कथन

संस्कृत-व्याकरण की यह पुस्तक सम्बद्ध कक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार लिखी गई है । संस्कृति की आत्मा सदैव साहित्य, संगीत और कला में ही निवास करती है । संस्कृत-व्याकरण का ज्ञान कराकर इसके साहित्य की ओर छात्रों को आकर्षित करना तथा इसके अध्ययन के प्रति रुचि जगाना ही इस रचना का प्रधान उद्देश्य है क्योंकि संस्कृत साहित्य ही हमारी भारतीय मनीषा के गौरवमय अतीत का सुनहरा दर्पण है । इस भाषा के संवर्धन तथा पोषण हेतु वर्ष 99-2000 को संस्कृत वर्ष के रूप में मनाते हुए देशभर में कई आयोजन हुए । इसी सन्दर्भ में वर्ष 2001 में विश्व संस्कृत सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था । उस अवसर पर मैंने स्पोकन-संस्कृत नामक पुस्तक लिखी थी । विगत कई वर्षों से संस्कृत अध्ययन-अध्यापन के प्रति जनमानस विशेषकर माध्यमिक स्तर के छात्रों में इस भाषा के प्रति घटती रुचि विशेष चिन्ता का विषय है । मेरे मन में कई वर्षों से यह इच्छा थी कि विद्यालय स्तर के छात्रों को किस प्रकार सरल एवं रुचिकर ढ़ंग से इस भाषा से परिचित कराऊँ । इसी कारण जब एवरशाइन प्रकाशन के श्री संजय जी ने मुझे माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए संस्कृत-व्याकरण की पुस्तक लिखने का उत्तरदायित्व सौंपना चाहा तो मैंने इसे सहर्ष ही स्वीकार कर लिया ।

मैं अपने प्रयास में कहाँ तक सफल हो सका हूँ – इसका निर्णय आप विद्वज्जन अध्यापकों तथा छात्रों पर ही छोड़ रहा हूँ । माध्यमिक स्तर की पुस्तकों के प्रारम्भ में लेखकीय वक्तव्यों में प्रायः स्वरचित ग्रन्थ की विशेषताएँ बताई जाती हैं, परन्तु ऐसा करते हुए मुझे आत्मश्लाघा का अनुभव हो रहा है । अतः इसकी समालोचना का कार्य आप सुधी अध्येताओं पर ही छोड़ रहा हूँ ।

इस पुस्तक के लेखन कार्य में मुझ पर अहेतुकी कृपा रखने वालों की शुभाशंसा ही मेरी प्रेरणा का उत्स है । इस सन्दर्भ में डा॰ शशि तिवारी, रीडर, मैत्रेयी कॉलेज; डा॰ शुक्ला मुखर्जी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली; डा॰ शकुन्तला पुञ्जानी एवं आदरणीय दीदी डा॰ शारदा शर्मा, रिसर्च साइन्टिस्ट, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रति मैं

श्रद्धावनत हूँ, जिन्होंने इस प्रकार के रचनात्मक कार्यों के लिए सर्वदा मुझे प्रोत्साहित किया है । आप सबों के प्रति कृतज्ञताज्ञापन इस बालबुद्धि की धृष्टता होगी । प्रो० चन्द्रकान्त शुक्ल, उपकुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार); डा० कांशीराम जी, संस्कृत विभाग, हंसराज कॉलेज जैसे गुरुओं तथा आदरणीय चाचा जी डा० रामकरण शर्मा, पूर्व कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं वाराणसी की प्रेरणा से ही व्याकरण अध्ययन में मेरी प्रवृत्ति हुई । मैं इनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ ।

अपने स्नेहिल लोचनों से जिस सूक्ष्मता से इस पुस्तक का निरीक्षण करके इसके प्रत्येक पक्ष से मुझे अवगत कराया गया, तदर्थ अपने मित्र मण्डली के सदस्यों को धन्यवाद देकर मित्रता को औपचारिकता में आबद्ध नहीं करना चाहता हूँ । ग्रन्थ के कुशल टंकण के लिए जैन कम्प्यूटर्स के आलोक जी साधुवाद के पात्र हैं ।

प्रस्तुत पुस्तक के किसी अंश में यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो आप अध्यापकों तथा छात्रों से विनम्र निवेदन है कि प्रकाशक को पत्र द्वारा सूचित कर मुझे उपकृत करें । आगामी संस्करण में उन त्रुटियों को दूर करने हेतु आपके पत्रों का स्वागत है ।

– शशिकान्त पाण्डेय

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ-संख्या

1. संस्कृत भाषा - एक परिचय
(Sanskrit Language - An Introduction) 9-10
2. वर्ण-विचार एवं संस्कृत वर्णमाला का परिचय
(Phonology and Introduction of Sanskrit Alphabets) 11-16
3. वर्णों का उच्चारण-स्थान
(Organs of Speech) 17-18
4. लिंग, वचन तथा पुरुष
(Genders, Numbers and Persons) 19-20
5. शब्दों का वर्गीकरण
(Classification of Words) 21-23
6. वाक्य-निर्माण – कर्त्ता और क्रिया
(Sentence Formation – Subject and Verb) 24-25
7. कारक और विभक्तियाँ
(Case and Case-endings) 26-28
8. शब्द-रूप – संज्ञाओं और सर्वनामों की रूपावली
(Declensions of Nouns and Pronouns) 29-44
9. धातु-रूप
(Conjugation of Roots) 45-71
10. विशेष शब्दों के साथ विभक्तियाँ एवं विशेषणों का प्रयोग
(Case-endings With Special Words and Use of Adjectives) 72-74
11. संख्याएँ
(Numbers) 75-78

क्रमांक	विषय	पृष्ठ-संख्या
12.	अव्यय-प्रकरण (Indeclinables)	79-80
13.	अनुवाद (Translation)	81-85
14.	निबन्ध-लेखन (Essay writing)	86-87
15.	पत्र-लेखन (Letter writing)	88-89
16.	उपयोगी-शब्दकोश (Glossary)	90-96

1. संस्कृत भाषा – एक परिचय
(Sanskrit Language – An Introduction)

भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करता है । संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है । संस्कृत शब्द का अर्थ है – 'संस्कार की हुई' अथवा 'शुद्ध की हुई' । इस भाषा का विकास भी अपने रूप एवं प्रयोग की दृष्टि से कई वर्षों में हुआ । अर्थ-बोध के लिए जब इसमें प्रयुक्त शब्दों में संस्कार ला दिया गया तब इसका नाम संस्कृत पड़ा । यह संस्कार लाना दिव्य-पुरुषों का कार्य था, अतः इसे 'देवभाषा' भी कहा गया है ।

भाषा को लिखित रूप प्रदान करने के लिए **लिपि** (Script) की सहायता ली जाती है । संस्कृत भाषा **देवनागरी लिपि** में निबद्ध है ।

व्याकरण (Grammar)

किसी भी भाषा का शुद्ध एवं पूर्ण ज्ञान उसके व्याकरण को जाने बिना सम्भव नहीं है । कोई भी भाषा बोलते या लिखते समय हम वाक्यों का प्रयोग करते हैं । वाक्य शब्दों से बनते हैं । जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के वास्तविक स्वरूप और अर्थ को बतलाया जाता है, उसे व्याकरण-शास्त्र कहते हैं । व्याकरण को 'शब्दशास्त्र' भी कहते हैं । व्याकरण के तीन अंग होते हैं । किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई **वर्ण** या **अक्षर** कहलाती है ।

वर्ण मिलकर शब्द बनते हैं तथा शब्दों से मिलकर वाक्य बनते हैं । अतः व्याकरण में इन तीन विषयों पर ही विचार किया जाता है – **वर्ण, शब्द** तथा **वाक्य** । वर्णों का समूह **वर्णमाला** कहलाता है, जिसकी चर्चा अगले अध्याय में की जाएगी । **वर्ण-विचार** के अन्तर्गत उस भाषा के वर्णों का आकार-प्रकार, उच्चारण-स्थान तथा उनके भेद आदि आते हैं । **शब्द-विचार** के अन्तर्गत शब्दों के प्रकृति-प्रत्यय पर विचार किया जाता है । इसमें शब्दों के रूप, लिंग और वचन तथा धातुओं के पुरुष, वचन एवं काल की भी चर्चा की जाती है । **वाक्य-विचार** के अन्तर्गत वाक्यों का निर्माण एवं पत्र तथा निबन्ध आदि के लेखन का ज्ञान कराया जाता है ।

संस्कृत व्याकरण के तीन अंग

- 1 — वर्ण-विचार (Phonology)
- 2 — शब्द-विचार (Etymology)
- 3 — वाक्य-विचार (Syntax)

वर्ण (Alphabet) की परिभाषा पर अगले अध्याय में विस्तार से चर्चा की जाएगी ।

शब्द (Word)

वर्णों का ऐसा समूह जो किसी अर्थ को प्रकट करता है, **शब्द** कहलाता है । जैसे – घट = घ् + अ + ट् + अ । वर्णों का ऐसा मेल या समूह जिसका कोई अर्थ नहीं निकलता हो, उसकी चर्चा व्याकरण-शास्त्र में नहीं की जाती है ।

वाक्य (Sentence)

सार्थक शब्द मिलकर जब कोई निश्चित अर्थ प्रकट करते हैं, तो उस शब्द-समूह को **वाक्य** कहते हैं । जैसे राम घर जाता है – यह शब्द-समूह एक अर्थ को बताता है, अत: यह एक वाक्य है । परन्तु इसी वाक्य में अगर शब्दों के क्रम बदल दिए जाएँ तो यही शब्द-समूह निरर्थक हो जाएगा, तब इसे वाक्य नहीं कहा जा सकता । संस्कृत-व्याकरण में अर्थ की दृष्टि से वाक्य ही भाषा की मौलिक इकाई है ।

अभ्यास

1. भाषा का क्या महत्त्व है ?
2. विश्व की प्राचीनतम भाषा कौन सी है ?
3. भाषा को किसकी मदद से लिखित रूप प्रदान किया जाता है ?
4. संस्कृत शब्द का क्या अर्थ है ?
5. शब्द एवं वाक्य की परिभाषा दें ।
6. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

   (क) संस्कृत भाषा को .... भाषा भी कहा जाता है ।

   (ख) भाषा को लिखित रूप .... की सहायता से दी जाती है ।

   (ग) व्याकरण के तीन अंग हैं – ...., ... तथा .... ।

   (घ) शब्द .... से बने होते हैं, तथा .... शब्दों के संयोग से ।